Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान करने में संचार माध्यमों का योगदान

डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा [1] , महेश कुमार[2]
[1]विभागाध्यक्ष, डॉ बी आर अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उ.प्र.
[2]पीएचडी शोधार्थी, जनसंचार विभाग, एमजेआरपी विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश–

आज दुनिया में एक अरब से ज्यादा लोग हिन्दी भाषा को जानते और बोलते हैं। एक ताजा आकलन के मुताबिक पूरी दुनिया में छह हजार 809 भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें से 905 भाषाओं को बोलने वालों की संख्या एक लाख से भी कम है। विश्व में यह संख्या निश्चित तौर पर चीन की मैंड्रीन भाषा बोलने वालों को छोड़कर दूसरे नंबर पर है। यानी हिंदी विश्व में चीनी भाषा के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी को इस मुकाम तक पहुँचाने में संचार माध्यमों का उल्लेखनीय योगदान रहा है जिसमें हिन्दी फिल्में, समाचार पत्र, रेडियो चैनल, टीवी चैनल, सोषल एवं न्यू मीडिया सामिल है। वैश्विक संदर्भ में हिंदी की वास्तविक शक्ति को उभारने में संचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे कई देषों में हिन्दी के कई केंद्र खुल गए हैं, जिनमें सैकड़ों लोग हमारी भाषा सीख रहे हैं। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में काफी आगे बढ़ चुकी है। भाषा–विषयक कार्य–क्षेत्र में हिन्दी ने वैश्विक मान्यता प्राप्त कर ली है।

प्रस्तावना–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे समाज में रहने के लिए एक–दूसरे के विचारों, भावनाओं–इच्छाओं का आदान–प्रदान करना पड़ता हैं और यह काम भाषा के माध्यम से ही संभव है। यानी, भाषा हमारे लिए संप्रेषण यानी बोलचाल का माध्यम होती है। संप्रेषण का माध्यम होती है। इसके द्वारा हम अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। बातचीत कर सकते हैं। दूसरे लोगों के विचार सुन सकते हैं। भारत में हिन्दी के माध्यम से ही हम एक–दूसरे के समक्ष अपने विचारों, भावनाओं, इच्छाओं का आदान–प्रदान करते हैं। दरअसल, हिंदी भाषा का मूल प्राचीन संस्कृत भाषा में है। इस भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप कई शताब्दियों के बाद हासिल किया है और बड़ी संख्या में बोलीगत विभिन्नताएं आज भी मौजूद हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो कि कई अन्य भारतीय भाषाओं के लिए संयुक्त है। हिंदी के अधिकतम शब्द संस्कृत से आए हैं। इसकी व्याकरण की भी संस्कृत भाषा के साथ समानता है। देश की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है हिंदी भारतीय संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। उल्लेखनीय है कि जब भारत में ब्रिटिश शासन था, तब राजकाज की भाषा अंग्रेजी थी, लेकिन आजादी के बाद भारत सरकार ने अपना संविधान बनाया और उसे राजभाषा का दर्जा दिया गया, क्योंकि देश में इसे बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक होती है। हिन्दी भारत के प्रमुख राज्य जैसे मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, झारखंड, उत्तराखंड, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में प्रमुख रूप से बोली जाती है। इन राज्यों में हिन्दी राजकाज की सह–भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है, लेकिन देश में अधिकांश कामकाज आज भी अंग्रेजी में ही होता है। इसकी वजह यह है कि भारतीय संविधान में व्यवस्था दी गई कि केंद्र सरकार की पत्राचार की भाषा हिंदी और अंग्रेजी होगी। यह विचार किया गया था कि 1965 तक हिंदी पूर्णतरू केंद्र सरकार के कामकाज की भाषा बन जाएगी, साथ में राज्य सरकारें अपनी पंसद की भाषा में कामकाज संचालित करने के लिए स्वतंत्र होंगी। लेकिन राजभाषा अधिनियम (1963) को पारित करके यह व्यवस्था की गई कि सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग भी अनिश्चित काल के लिए जारी रखा जाए। आज भी सरकारी दस्तावेजों, न्यायालयों आदि में अंग्रेजी का इस्तेमाल होता है। हालांकि, हिंदी के विस्तार के संबंध में संवैधानिक निर्देश बरकरार रखा गया। विश्व का हिन्दी भाषा के प्रति बढ़ता रुझान भारत में तो कामकाज की भाषा अंग्रेजी है और धीरे–धीरे हिन्दी को बढ़ावा दिया जा रहा है। केंद्र में जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार आई है, तभी से हिन्दी को प्रोत्साहित करने के कई प्रयास हुए हैं। इससे पहले भी अटल बिहारी वाजपेयी जी के शासनकाल में हिन्दी को काफी प्रोत्साहित किया गया था। इन्हीं सब प्रयासों के चलते हिन्दी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। दुनिया के कई देशों में हिन्दी के प्रति रूझान बढ़ा है, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति को न केवल अभिव्यक्त करती है, बल्कि विश्व को भारतीय एकता–अखंडता के दर्शन भी कराती है। लिहाजा, विदेशियों में भी भारत की धनी संस्कृति को समझने की रुचि बढ़ी है। यही वजह है कि कई देशों ने अपने यहां भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है। भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति पर विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करने के अलावा इन केंद्रों में हिंदी के पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। चीन जैसे कट्टर देश के लोग हिन्दी सीख रहे हैं। वैश्वीकरण और निजीकरण के इस परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों को देखते हुए संबंधित व्यापारिक साझेदार देशों की भाषाओं की अन्तर–शिक्षा की जरूरत महसूस की जाने लगी है। इस घटनाक्रम ने अन्य देशों में हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा बनाने में काफी योगदान किया है। अमेरिका में कुछ स्कूलों

ने फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ–साथ हिंदी को भी विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी के कई केंद्र खुल गए हैं, जिनमें सैकड़ों लोग हमारी भाषा सीखते हैं। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में काफी आगे बढ़ चुकी है। भाषा–विषयक कार्य–क्षेत्र में हिन्दी ने वैश्विक मान्यता प्राप्त कर ली है। तकनीकी भाषा के रूप में हिंदी हिन्दी की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है, इसी को मद्देनजर रखते हुए इसका इस्तेमाल तकनीकी तौर पर भी होने लगा है और इसकी शुरुआत भारत में ही वर्ष 1991 में हो चुकी थी। हिन्दी भाषा का तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी में इस्तेमाल और विकास के लिए 1991 में इलेक्ट्रॉनिकी विभाग के अधीन भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी विकास मिशन (टीडीआईएल) की स्थापना के साथ हुई। इसके उपरांत मिशन के तहत बड़ी संख्या में गतिविधियाँ संचालित की गईं। भारतीय भाषाओं की स्मृद्धि को ध्यान में रखते हुए 1991 में हिंदी सहित संवैधानिक रूप से स्वीकार्य प्रत्येक भाषा में तीन लाख शब्दों का संग्रह विकसित करने का फैसला किया गया। तदनुसार हिंदी शब्द संग्रह विकसित करने का काम आईआईटी दिल्ली को सौंपा गया। हिंदी संग्रह के 1981–1990 के दौरान मुद्रित पुस्तकें, जर्नल्स, पत्रिकाएं, समाचार पत्र और सरकारी दस्तावेज हैं। इन्हें छरू मुख्य श्रेणियों में बांटा गया है समाज विज्ञान, भौतिक एवं व्यावसायिक विज्ञान, सौन्दर्य–विषयक, प्राकृतिक विज्ञान, वाणिज्य, सरकारी और मीडिया भाषाएं तथा अनुदित सामग्री। शब्द स्तरीय टैगिंग, शब्द गणना, अक्षर गणना, फ्रीक्वेन्सी गणना के लिए सॉफ्टवेयर टूल्स भी विकसित किए गए। विभिन्न संस्थानों द्वारा करीब तीस लाख शब्दों को मशीन से पढ़ने योग्य संग्रह विकसित किया गया है। इसके अलावा, विभिन्न संगठनों ने हिंदी शब्द संसाधक विकसित किए हैं और सिद्धार्थ (डीसीएम, 1983 में) से लेकर लिपि (हिंदी ट्रॉनिक्स 1983), आईएसएम, आईलीप, लीप ऑफिस (सी डैक, पुणे), जिस्ट, श्रीलिपि, सुलिपि, एपीएस, अक्षर आदि तक हिंदी में और भी कई अन्य वर्ड–प्रोसेसर उपलब्ध हैं। सीडैक पुणे ने जिस्ट टेक्नोलॉजी विकसित की है, जिससे सूचना प्रौद्योगिकी में भारतीय भाषाओं का प्रयोग सुविधाजनक हुआ है। यह सूचना अन्तर–परिवर्तन, स्क्रीन और प्रिन्टर पर उनके प्रदर्शन के लिए विशेष फॉन्ट्स (आईएसएफओसी), विभिन्न लिपियों के लिए संयुक्त की–बोर्ड लेआउट (इनस्क्रिप्ट) आदि का प्रयोग करते हुए भारतीय लिपि कोड का इस्तेमाल करता है।

भारत को दुनिया से जोड़ने का काम नब्बे के दशक में पीवी नरसिंहराव की सरकार ने किया। तभी से देश में वैश्वीकरण की शुरुआत हुई और आज भारत एक बड़े बाजार के रूप में दुनिया के सामने उपस्थित है। भूमंडलीकरण के इस दौर में भारत में अपने उत्पाद खपाने के लिए विदेशी कंपनियों के लिए जरूरी हो गया है कि वे यहां की भाषा को भी न केवल प्रोत्साहित करे, बल्कि अपने कामकाज में भी इसका इस्तेमाल करे, तभी वे यहां अपने पैर जमा सकती थीं और यही उन्होंने किया। इसी का परिणाम यह हुआ कि आज हमारी राजभाषा के सामने अपार संभावनाएँ उपलब्ध हैं। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में डिजीटल मीडिया द्वारा हिंदी को अफ्रीका, मध्य–पूर्व, यूरोप और उत्तरी अमेरीका में एक चित्ताकर्षक ढंग से लगातार पहुँचाया जा रहा है। विश्व में अपने परचम को लेकर हिंदी के साथ अग्रणी कतार में दौड़ लगाने वाली जर्मन, फ्रेंच, जापानी, स्पैनिश और चीनी जैसी प्रमुख भाषाएँ भी कदम से कदम मिलाकर एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में दौड़ रही हैं। वैश्विकरण ने दुनिया को एक अरब से भी अधिक की आबादी वाले भारत और तेज गति से विकसित हो रही इसकी अर्थव्यवस्था ने अपनी ओर आकर्षित होने के लिए विवश कर दिया है। इसी का परिणाम है कि दुनियाभर में हिन्दी का आज डंका बजने लगा है।

दुनिया के करीब 120 देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। इनमें से बहुत बड़ी संख्या अपनी भाषा भूल चुकी है, पर इसका मतलब यह नहीं है कि वे हिंदी सीख नहीं रहे हैं। भूमंडलीय आकाश पर पैर पसारती हिंदी अपने कई रूप दिखाते हुए यह संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुंच चुकी है। इसके प्रचार–प्रसार के लिए अनेक स्वंयसेवी संस्थाएँ भी इस दिशा में अपने–अपने ढंग से प्रयासरत हैं। नतीजतन, अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी अपनी छाप छोड़ रही है तथा आर्थिक रूप से हमारा देश सतत् समृद्ध और सक्षम होते जा रहा है इसलिए लोग अब भारत की ओर मुड़ रहे हैं।

हिन्दी से विश्व को जुड़ाव को देखते हुए सन 1975 में 10 से 12 जनवरी तक महाराष्ट्र के नागपुर शहर में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह हिंदी के विश्व स्तरीय आयोजन की शुरुआत थी। इसके बाद दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन 2 से 4 अगस्त तक मॉरीशस में हुआ। नागपुर के बाद नयी दिल्ली में 28–30 अक्टूबर, 1983 में तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसके बाद चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन ,(02–04 दिसम्बर, 1993) मॉरीशस, पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (04–08 अप्रैल, 1996) ट्रिनिदाद एवं टोबेगो, छठा विश्व हिंदी सम्मेलन (14–18 सितंबर, 1999) ब्रिटेन, सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (06–09 जून, 2003) सूरीनाम, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (13–15 जुलाई, 2007) अमेरिका, नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (22–24 सितंबर, 2012) दक्षिण अफ्रीका में हुआ। दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन देश में तीसरी बार मध्यप्रदेश में (10–12) सितम्बर 2015 को आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में देश के लाखों लोगों के साथ ही दुनिया के विभिन्न देशों के 700 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुऐ। यह हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि इस आयोजन को दुनिया भर में न केवल सराहा गया बल्कि इसमें भाग लेने के लिए विदेशों से अत्यधिक मात्रा में लोग आये। इसी के साथ यह भी स्मरणीय है कि प्रकाशन जगत में भी वैश्वीकरण के साथ जुड़ी नई तकनीक के कारण मूलभूत क्रांति संभव हो सकी है। विभिन्न आयु और रुचियों के पाठकों के लिए हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है।

1. रेडियो

1.1 बीबीसी हिन्दी सेवा–

बीबीसी की हिंदुस्तानी सेवा ने अपना पहला प्रसारण 11 मई 1940 को किया। बीबीसी हिन्दी सेवा पिछले 76 वर्ष से अधिक समय से ताजा समाचार और सामयिक विषयों पर कार्यक्रम प्रसारित कर रही है। इन वर्षों में दुनिया में काफी कुछ बदला है और हिन्दी सेवा हमेशा समय के साथ चलती रही है। विश्वसनीयता ने लोकप्रियता का रास्ता अपने आप खोल दिया। एक स्वतंत्र सर्वेक्षण के अनुसार इस समय भारत में करीब सवा करोड़ लोग बीबीसी हिन्दी का प्रसारण सुनते हैं। भारत के बाहर भी श्रोताओं की बड़ी संख्या है और विदेशों में बहुत सारे लोग इंटरनेट पर बीबीसी हिन्दी का प्रसारण सुनते हैं। इंटरनेट क्रांति बीबीसी हिन्दी के प्रसारण के लिए नए अवसर लेकर आई है। हर रोज लाखों लोग बीबीसी हिन्दी की वेबसाइट पर आते हैं और यह आंकड़ा बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बीबीसी हिन्दी सेवा ने हिन्दी भाषा को वैष्विक स्वरूप प्रदान करने और विस्तार में अहम भूमिका निभाई है।

1.2 आकाशवाणी–

ऑल इंडिया रेडियो भारत की सरकारी रेडियो सेवा है। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरूआत 1920 के दशक में हुई। पहला कार्यक्रम 1923 में मुंबई के रेडियो क्लब द्वारा प्रसारित किया गया। इसके बाद 1927 में मुंबई और कोलकाता में निजी स्वामित्व वाले दो ट्रांसमीटरों से प्रसारण सेवा की स्थापना हुई। सन् 1930 में सरकार ने इन ट्रांसमीटरों को अपने नियंत्रण में ले लिया और भारतीय प्रसारण सेवा के नाम से उन्हें परिचालित करना आरंभ कर दिया। 1936 में इसका नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो कर दिया और 1957 में आकाशवाणी के नाम से पुकारा जाने लगा। नई दिल्ली स्थिति मुख्यालय से 52 घण्टों से अधिक की अवधि के लिए 82 भाषाओं एवं बोलियों (भारतीय और विदेशी) में 500 से अधिक समाचार बुलेटिन और देश भर में 44 क्षेत्रीय समाचार इकाइयों द्वारा प्रसारण किया जाता है। ये समाचार बुलेटिन प्राथमिक, एफएम और आकाशवाणी के डीटीएच चौनलों पर प्रसारित किए

जाते हैं। इस समाचार प्रसारण में भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल 22 आधिकारिक भाषाओं और 18 विदेशी भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं एवं बोलियों में किया जाने वाला प्रसारण शामिल है।

आकाशवाणी विदेश सेवा प्रभाग का विश्व के विदेशी रेडियो नेटवर्क में ऊंचा स्थान है। यह 100 देशों के लिए 27 भाषाओं जिनमें 16 विदेशी तथा 11 भारतीय हैं यह रोजाना 70 घंटे 30 मिनट का प्रसारण करता है। आकाशावाणी अपने विदेशी प्रसारणों से विदेशी श्रोताओं को खुले समाज के रूप में भारत के विचारों और उपलब्धियों को उजागर कर भारत के संस्कार और भारतीय वस्तुओं से जोड़े रखता है। न्यूज रील पत्रिका कार्यक्रम के अलावा खेल और साहित्य पर कार्यक्रम, वार्ताएं और सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विषयों पर चर्चाएं, विकास संबंधी गतिविधियों पर कार्यक्रम, महत्वपूर्ण आयोजन और संस्थान, भारत के विविध क्षेत्रों से लोक और आधुनिक संगीत संपूर्ण कार्यक्रम प्रसारण का बड़ा हिस्सा बनाते हैं। विदेश सेवा प्रभाग का प्रसारण 7 देशों, पश्चिमी एशिया, खाड़ी के देशों और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में किया जाता है जो रात 9 बजे तक जारी रहता है। विदेश सेवा प्रभाग ने नए प्रसारण गृह में नए व्यवस्था स्थापित होने से डिजिटल प्रसारण आरंभ किया है। अधिक से अधिक श्रोताओं को आकर्षित करने के लिए सभी आधुनिक उपकरण और उपस्कर उपयोग किए जा रहे हैं। आकाशवाणी द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रसारण को स्थापित करने का कार्य अमेरिका, कनाडा, पश्चिम और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में किया जाता है ताकि इंटरनेट पर आकाशवाणी सेवाओं का लाभ उठाया जा सके, यहां डीटीएच के माध्यम से 24 घण्टे विदेश सेवा प्रभाग की सेवाओं को प्राप्त किया जा सकता है। इस तरह करोड़ों हिन्दी भाषियों को आकषवाणी ने एक सूत्र में बांध रखा हैं।

1.3 विविध भारती–

विविध भारती भारत मे सार्वजनिक क्षेत्र के रेडियो चैनल आकाशवाणी की एक प्रमुख मनोरंजन प्रसारण सेवा है। भारत में रेडियो के श्रोताओं के बीच ये सर्वाधिक सुनी जाने वाली और बहुत लोकप्रिय सेवा है। इस पर मुख्यतः हिन्दी फिल्मी गीत सुनवाये जाते हैं। इसकी शुरुआत 3 अक्टूबर 1957 को हुई थी। वर्ष 2006–2007, विविध भारती के स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप मे भी मनाया। प्रारम्भ मे इसका प्रसारण केवल दो केन्द्रों, बम्बई तथा मद्रास से होता था। बाद मे धीरे धीरे लोकप्रियता के चलते आकाशवाणी के और भी केन्द्र इसका प्रसारण करने लगे। वर्तमान मे अनेकानेक केन्द्र आकाशवाणी की विज्ञापन प्रसारण सेवा के रूप मे अपने श्रोताओं को विविध भारती के कार्यक्रम सुनवाते हैं। अब यह प्रसारण डीटीएच, वेबसाईट और विविध भारती के मोबाइल एप पर भी उपलब्ध है। देष–विदेष में करोड़ों श्रोता आज विविध भारती के प्रसारण सुनते हैं।

2. टेलीविजन एवं दूरदर्शन–

दूरदर्शन का पहला प्रसारण 15 सितंबर, 1959 को प्रयोगात्मक आधार पर आधे घण्टे के लिए शैक्षिक और विकास कार्यक्रमों के रूप में शुरू किया गया। उस समय दूरदर्शन का प्रसारण सप्ताह में सिर्फ तीन दिन आधा–आधा घंटे होता था। तब इसको 'टेलीविजन इंडिया' नाम दिया गया था बाद में 1975 में इसका हिन्दी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया। यह दूरदर्शन नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि टीवी का हिंदी पर्याय बन गया।

शुरुआती दिनों में दिल्ली भर में 18 टेलीविजन सेट लगे थे और एक बड़ा ट्रांसमीटर लगा था। तब दिल्ली में लोग इसको कुतुहल और आश्चर्य के साथ देखते थे। इसके बाद दूरदर्शन ने धीरे–धीरे अपने पैर पसारे और दिल्ली (1965), मुम्बई (1972), कोलकाता (1975), चेन्नई (1975), में इसके प्रसारण की शुरुआत हुई। शुरुआत में तो दूरदर्शन यानी टीवी दिल्ली और आसपास के कुछ क्षेत्रों में ही देखा जाता था। दूरदर्शन को देश भर के शहरों में पहुँचाने की शुरुआत 80 के दशक में हुई और इसकी वजह थी 1982 में दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले एशियाई खेल थे। एशियाई खेलों के दिल्ली में होने का एक लाभ यह भी मिला कि श्वेत और श्याम दिखने वाला दूरदर्शन रंगीन हो गया था। फिर दूरदर्शन पर शुरु हुआ पारिवारिक कार्यक्रम हम लोग जिसने लोकप्रियता के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए। 1984 में देश के गाँव–गाँव में दूरदर्शन पहुँचाने के लिए देश में लगभग हर दिन एक ट्रांसमीटर लगाया गया। इसके बाद आया भारत और पाकिस्तान के विभाजन की कहानी पर बना बुनियाद जिसने विभाजन की त्रासदी को उस दौर की पीढ़ी से परिचित कराया। इस धारावाहिक के सभी किरदार आलोक नाथ (मास्टर जी), अनीता कंवर (लाजो जी), विनोद नागपाल, दिव्या सेठ घर घर में लोकप्रिय हो चुके थे। फिर तो एक के बाद एक बेहतरीन और शानदार धारवाहिकों ने दूरदर्शन को घर घर में पहचान दे दी। दूरदर्शन पर 1980 के दशक में प्रसारित होने वाले मालगुडी डेज, ये जो है जिन्दगी, रजनी, ही मैन, वाहः जनाब, बुधवार और शुक्रवार को 8 बजे दिखाया जाने वाला फिल्मी गानों पर आधारित चित्रहार, भारत एक खोज, व्योमकेश बक्शी, विक्रम बैताल, टर्निंग प्वाइंट, अलिफ लैला, शाहरुख खान की फौजी, रामायण, महाभारत, देख भाई देख ने देश भर में अपना एक खास दर्शक वर्ग ही नहीं तैयार कर लिया था बल्कि गैर हिन्दी भाषी राज्यों में भी इन धारवाहिकों को जबर्दस्त लोकप्रियता मिली।

रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक धारावाहिकों ने तो सफलता के तमाम कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए थे, 1986 में शुरु हुए रामायण और इसके बाद शुरु हुए महाभारत के प्रसारण के दौरान रविवार को सुबह देश भर की सड़कों पर कर्फ़्यू जैसा सन्नाटा पसर जाता था और लोग अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से लेकर अपनी यात्रा तक इस समय पर नहीं करते थे। रामायण की लोकप्रियता का आलम तो ये था कि लोग अपने घरों को साफ–सुथरा करके अगरबत्ती और दीपक जलाकर रामायण का इंतजार करते थे और एपिसोड के खत्म होने पर बकायदा प्रसाद बाँटी जाती थी।

भारत में अपने आरंभ से लगभग 30 वर्ष तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही किंतु वर्ष 1980 और 1990 के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिये हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान किया। वर्ष 1990 के दशक में मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चौनलों के पदार्पण के उपरांत यह प्रक्रिया और तेज हो गई। रेडियो की तरह टेलीविजन ने भी मनोरंजन कार्यक्रमों में फिल्मों का भरपूर उपयोग किया और फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फिल्मों गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने–कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे बढ़ाया। टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शकों में अपना विशेष स्थान बना लिया। सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर–घर में देखे जाने लगे। रामायण, महाभारत हमलोग, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता के सूत्र बन गए। देखते–ही–देखते टीवी कार्यक्रमों के जुड़े लोग फिल्मी सितारों की तरह चर्चित और विख्यात हो गए। समूचे देश में टेलीविजन कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बदौलत देश के अहिंदी भाषी लोग हिंदी समझने और बोलने लगे।

'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे कार्यक्रमों ने लगभग पूरे देश को बांधे रखा। हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रमों में पूर्वोत्तर राज्यो, जम्मू–कश्मीर और दक्षिणी राज्यों के प्रतियोगियों ने भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस तथ्य को दृढ़ता से उजागर किया कि हिंदी की पहुंच समूचे देश में है। विभिन्न चौनलों ने अलग–अलग आयु वर्गों के लोगों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के सीधे प्रसारणों से भी अनेक अहिंदीभाषी राज्यों के प्रतियोगियो ने हिंदी में गीत गाकर प्रथम और द्वित्तीय स्थान प्राप्त किए। इन कार्यक्रमों में पुरस्कार के चयन में श्रोताओं द्वारा मतदान करने के नियम ने इनकी पहुंच को और विस्तृत कर दिया। टेलीविजन चौनलों पर प्रसारित किए जा रहे तरह–तरह के लाइव–शो में भाग लेने वाले लोगों को देखकर लगता ही नहीं कि हिंदी कुछ खास प्रदेशों की भाषा है। हिंदी फिल्मों की तरह टेलीविजन के हिंदी कार्यक्रमों ने भी भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़त दी हैं। मनोरंजन, फिल्म, संगीत, समाचार, स्वास्थ्य, बाजार, खेल, धार्मिक आदि क्षेत्र में कार्यरत सैंकडों हिन्दी चैनलों हिन्दी को अभूतपूर्व विस्तार दिया हैं। हिन्दी

टेलीविजन का आरम्भ बहुत धीमा था किन्तु उसके बाद इसने गति पकड़ी और इस समय भारत में हिन्दी टेलीविजन चैनलों की बाढ आ गयी है।

3. समाचार पत्र–

30 मई 1826 को हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदंत मार्तंड' का पहला अंक प्रकाशित हुआ। यह पत्र साप्ताहिक था। 'उदंत–मार्तंडश की शुरुआत ने भाषायी स्तर पर लोगों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। यह केवल एक पत्र नहीं था, बल्कि उन हजारों लोगों की जुबान था, जो अब तक खामोश और भयभीत थे। हिन्दी में पत्रों की शुरुआत से देश में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और आजादी की जंग। उन्हें काफी तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता था, ताकि अँग्रेजी सरकार के अत्याचारों की खबरें दबी रह जाएँ। अँग्रेज सिपाही किसी भी क्षेत्र में घुसकर मनमाना व्यवहार करते थे। लेकिन कुछ ही समय बाद इस पत्र के संपादक जुगल किशोर को सहायता के अभाव में 11 दिसम्बर 1827 को पत्र बंद करना पड़ा। 10 मई 1829 को बंगाल से हिन्दी अखबार बंगदूत का प्रकाशन हुआ। यह पत्र भी लोगों की आवाज बना और उन्हें जोड़े रखने का माध्यम। इसके बाद जुलाई, 1854 में श्यामसुंदर सेन ने कलकत्ता से 'समाचार सुधा वर्षण' का प्रकाशन किया। इसके बाद हिन्दी अखबारों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई। आज भारत के प्रमुख हिन्दी समाचारपत्र हैं अमर उजाला, बिजनेस स्टैंडर्ड, हिंदी दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, दैनिक नवज्योति, दैनिक ट्रिब्यून, देशबंधु, दिव्य हिमाचल, इकनॉमिक टाइम्स, हरिभूमि, हेराल्ड युवा नेता, हिंदुस्तान, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, पत्रिका, प्रभात खबर, पंजाब केसरी, संजीवनी, आज, तहलका हिन्दी आदि। भारतीय समाचार पत्र पंजियन कार्यालय के अनुसार किसी भी भारतीय भाषा में पंजीकृत प्रकाषनों की संख्या में सर्वाधिक हिन्दी की 44557 हैं। वर्ष 2015–16 के दोरान प्रकाषनों के कुल संचयन 61,02,38581 है जिसमें हिन्दी प्रकाषन 31,44,55,106 हैं। हिन्दी को विस्तार देने में समाचार पत्रों ने अहम भूमिका अदा की है। इनके अखबारों के ई–संस्करण से दुनिया भर में हिन्दी भाषी खबरों का आनन्द लेते है।

4.फिल्म और सिनेमा–

सन 1913 से शुरू हुआ भारतीय सिनेमा का सफर अपने 103 साल का सफर तय कर चुका हैं। इस सफर में सिनेमा के साथ–साथ हिन्दी का भी व्यापक रूप से विस्तार हुआ हैं। इसी प्रकार फिल्म के माध्यम से भी हिंदी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है। आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिंदी सिनेमा ऑस्कर तक पहुँच रहा है। दुनिया की संस्कृतियों को निकट लाने के क्षेत्र में निश्चय ही इस संचार माध्यम का योगदान चमत्कार कर सकता है। यदि मनोरंजन और अर्थ उत्पादन के साथ–साथ सार्थकता का भी ध्यान रखा जाए तो सिनेमा सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हो सकता है। इसमें संदेह नहीं कि सिनेमा ने हिंदी की लोकप्रियता भी बढ़ाई है और व्यावहारिकता भी।

भारतीय सिनेमा ने 20 वीं शती के आरम्भिक काल से ही विश्व के फिल्म जगत पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। भारतीय सिनेमा के अन्तर्गत भारत के विभिन्न भागों और विभिन्न भाषाओं में बनने वाली फिल्में आतीं हैं। भारतीय फिल्मों का अनुकरण पूरे दक्षिण एशिया तथा मध्य पूर्व में हुआ। भारत में सिनेमा की लोकप्रियता का इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ सभी भाषाओं में मिलाकर प्रतिवर्ष 1,000 तक फिल्में बनीं हैं। यह संख्या हॉलीवुड में बनने वाली फिल्मों से लगभग 40 प्रतिशत ज्यादा है। फिल्म उद्योग में प्रति वर्ष बीस हजार करोड़ का व्यवसाय होता है। लगभग 20 लाख लोगों का रोजगार इस उद्योग पर निर्भर है। हिंदी फिल्में कुल बनने वाली फिल्मों के एक तिहाई से अधिक नहीं होती लेकिन व्यवसाय में उनकी भागीदारी लगभग दो तिहाई है। वैसे तो भारतीय (विशेषतः हिंदी) फिल्में चौथे–पांचवे दशक से ही भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर भी देखी जाती थीं, खासतौर पर अफ्रीका के उन देशों में जहां भारतीय बड़ी संख्या में काम के सिलसिले में जाकर बस गए थे। लेकिन पिछले दो दशकों में भारतीय फिल्मों ने अमेरिका, यूरोप और एशिया के दूसरे क्षेत्रों में भी अपना बाजार का विस्तार किया है। यह भी गौरतलब है कि भारत में अब भी हॉलीवुड की फिल्मों की हिस्सेदारी चार प्रतिशत ही है जबकि यूरोप, जापान और दक्षिण अमरीकी देशों में यह हिस्सा कम–से–कम चालीस प्रतिशत है। भारत की कथा फिल्मों ने कहानी कहने की जो शैली विकसित की और जिसे प्रायः बाजारू, अरचनात्मक और अकलात्मक कहकर तिरस्कृत किया जाता रहा उसी ने भारतीय फिल्मों को हॉलीवुड के वर्चस्व में जाने से बचाये रखा। 20 वीं शदी में हॉलीवुड तथा चीनी फिल्म उद्योग के साथ भारतीय सिनेमा भी वैश्विक उद्योग बन गया

5. न्यू मीडिया–

5.1 यू–ट्यूब–

वर्तमान दौर का सबसे लोकप्रिय माध्यम है। यह दुनिया की सबसे बड़ी सर्च इंजन गूगल के द्वारा संचालित है। इसकी शुरूआत नवम्बर 2006 से हुई थी। अपने शुरूआत से ही इसकी लोकप्रियता चरम पर है। इस सामाजिक साइट्स के करोड़ों विडियो क्लिप उपलब्ध है। दुनिया शायद ही कोई संगीत, फिल्म, या अन्य कार्यकर्म हो, जो यहाँ उपलब्ध न हो । हिन्दी भाषा को वैष्विक दर्जा दिलाने में इस माध्यम का भी अहम योगदान हैं।

2 ब्लॉग–

'ब्लॉग' वेब लॉग का छोटा रूप है। इसकी शुरूआत 1997 में हुई। पीटर मरहोत्ज ने 1999 में पहली बार ब्लॉग शब्द का इस्तेमाल अपनी निजी वेबसाइट पर किया। शुरूआती दौर में ब्लॉग चलाना थोड़ा मुष्किल था, लेकिन बाद में ये काफी आसान हो गया। पहले ब्लॉक को चलाने के लिए एचटीएमएल का जानकार होना आवष्यक था लेकिन बाद में यूनिकोड के विकास ने पूरे मामले को आसान कर दिया। आज दुनिया के तकरीबन सभी भाषाओं में ब्लॉग लिखे जा रहे है। प्रस्तुति और विषयवस्तु की दृष्टि से भी ब्लॉग काफी समर्थ है। उच्च कोटी के लेख, समसामयिक मुद्दो पर व्यापक जानकार, विज्ञान प्रयोगिकी से लेकर ज्योतिष आदि विषयों पर हजारों पृष्ठो की सामग्री उपलब्ध है। सुप्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन नियमित रूप से हिन्दी में ब्लॉग लिख कर हिन्दी भाषियों को जोड़ें हुएं है।

5.3 ट्विटर–

ये माध्यम भी संदेष को पढ़ने और भेजने की सुविधा उपलब्ध कराता है। वर्तमान में ट्विटर के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि करीब–करीब सभी मीडिया संस्थानों में ऐसे कर्मचारी रखे जा रहे है जो इस बात का पता लगाये आज किस–किस नेता अभिनेता ने ट्विटर पर क्या–क्या पोस्ट किया है। वर्तमान में नेताओं और अभिनेताओं का ट्वीट एक फैषन बन गया है। ट्विटर 140 शब्दों से ज्यादा में संदेष भेजने की अनुमति नहीं देता है।

5.4 विकिपीडिया–

इंटरनेट आधारित इस मुक्तकोष की शुरूआत 2001 से हुई है। शुरू में इस साइट पर सिर्फ अंग्रेजी में ही सामग्री उपलब्ध हुआ करती थी, लेकिन यूनिकोड के प्रचलन में आने के बाद अब सभी भाषाओं में ये उपलब्ध है। ये साइट जीएनयू सॉफ्टवेयर लाइसेंस के अंतर्गत काम करता है। ये साइट इस बात की सुविधा प्रदान करता है कि पाठक चाहे तो इसमें प्रामाणिक बदलाव कर सकता है। लेकिन तथ्यों में हेर–फेर होने की स्थिति में उसे पुनः बदला भी जा सकता है।

5.5 फेसबुक–

फेसबुक को मार्क जुकरबर्ग का करिष्मा माना जाता है। इसका इस्तेमाल कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इस सोषल साइट के माध्यम से कोई भी व्यक्ति किसी से भी अपने राय को साझा कर सकता है। एक तरह से ये सामाजिक साइट जनसंचार के कनवरवेंस मॉडल पूरा करता हुआ दिखता है। इस सामाजिक साइट के माध्यम से व्यक्ति अपनी राय को लिखित, दृष्य माध्यम, श्रृव्य माध्यम एवं दृष्य–श्रव्य आदि माध्यमों से अपने विचार प्रकट कर सकता है।

इस सच्चाई से भी अब इंकार करना मुष्किल है कि वर्तमान युग नवीन मीडिया का है इसको अब दबाया नहीं जा सकता है और इसकी शक्ति दिनो–दिन बढ़ती ही जाएगी। इस नये मीडिया के प्रारूप में यूनिकोड के सहारे हिन्दी अपनी नई उड़ान पर हैं।

संदर्भ सामग्री–

1. भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ रू संचार माध्यम और हिंदी का संदर्भ– डॉ. ऋषभदेव शर्मा
2. समकालीन संचार सिद्धान्त–सुस्मिता बाला और अंबरीष सक्सेना
3. मीडिया विमर्ष–दिसंबर 2013, सितम्बर 2013, मार्च 2011
4. मीडिया शोध डॉ. मनोज यादव
5. भारत में संचार और जनसंचार प्रा. जे.वी.विलानिलम अनुवाद डॉ. शषिकांत शुक्ला
6. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य– डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
7. https://www.facebook.com/.../Vaishvik-Hindi-Sahity.
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/भारतीय–सिनेमा
9. www. allindiaradio.gov.in/
10. WWW.rni.gov.in
11. www.ddindia.gov.in/
12. https://hi.wikipedia.org/wiki/वैश्विक–हिन्दी–सम्मेलन
13. www.bbchindi.co.uk

महेश कुमार
पीएचडी शोधार्थी, जनसंचार विभाग, एमजेआरपी विश्वविद्यालय, जयपुर।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org